

भारतीय मानसून की उत्पत्ति के सिद्धांत (Theories of Origin of Indian Monsoon)

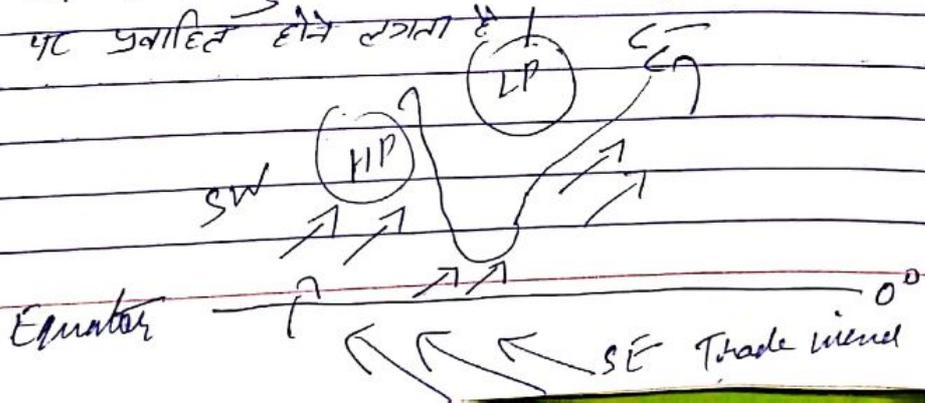
भारत की जलवायु मानसूनी है। 'मानसून' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के "मौसिम" शब्द से हुई है। मौसिम का अर्थ है - हवाओं की दिशा का मौसम के अनुसार पलट जाना अर्थात् भारत में जून माह से नवंबर माह की खाड़ी से चलने वाली हवाओं की दिशा में क्रमबद्ध परिवर्तन हो जाता है। 'मानसून' का सर्वप्रथम अध्ययन अरबी भूगोलवेत्ता अहमद मसूदी द्वारा किया गया था।

भारतीय मानसून की उत्पत्ति से संबंधित चार सिद्धांत प्रमुख हैं -

- (i) तापीय सिद्धांत (Thermal Concept)
- (ii) विषुवतीय पृष्ठतापन सिद्धांत (Equatorial heating)
- (iii) जेट स्ट्रीम सिद्धांत (Jet Stream theory)
- (iv) एल निनो सिद्धांत (El Nino theory)

(i) तापीय सिद्धांत - ब्रिटिश विद्वानों द्वारा यह सिद्धांत दिया गया था जिसमें इन्होंने टॉरॉप तथा लोक मॉडल प्रस्तुत किए। इस सिद्धांत के अनुसार मानसूनी हवाओं की उत्पत्ति का मुख्य कारण तापीय है। ग्रीष्मकाल में लार्स की फ्रोंटें उत्तरी गोलार्ध में क्रमबद्ध पड़ती हैं। इसके चर्चों पर एक बृहत् निम्न दाब (Low pressure) का क्षेत्र विकसित हो जाता है। इस निम्न दाब के कारण उत्तर पूर्वी व्यापारिक पवन (North East Trade wind) उत्पन्न हो जाता है।

तापीय विषुव रेखा के उत्तर की ओर व्यापारिक के कारण दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवन उत्तर की ओर विषुव रेखा को पार कर आ जाता है तथा पुनः किट्टे मिथम का अनुसरण करते हुए उत्तरी गोलार्ध में जाने पर यह पवन अपनी दक्षिण ओर अर्थात् उत्तर-पूर्व की ओर मोड़ जाता है तथा संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप पर प्रवाहित होने लगता है।

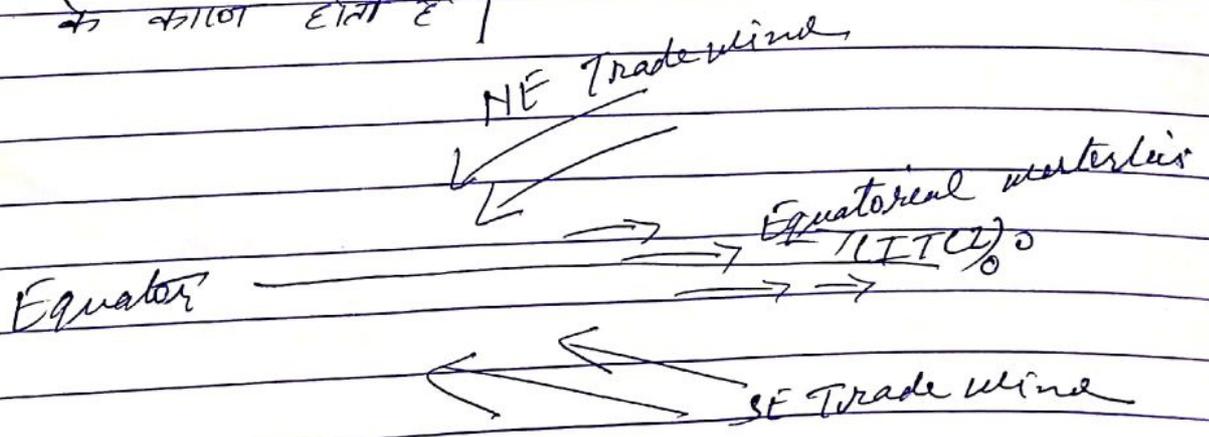


यह पवन चूंकि लंबी दूरी तक चलता हुआ होता है, अतः यह जलवाष्प युक्त होता है। यह भारतीय महाद्वीप में दो भागों में बँटकर वर्षा कर सकता है। उत्तर भाग आखा के द्वारा पश्चिमी घाट के पश्चिम तट पर तथा बंगाल की खाड़ी आखा के द्वारा संडमान तट निकोबार द्वीप समूह एवं उत्तर पूर्वी भाग में भारी वर्षा होती है। बंगाल की खाड़ी आखा उत्तर-पश्चिम भाग के निम्न वायु दबाव क्षेत्र की ओर बहती है तथा पूर्व से पश्चिम की जलवाष्प की कमी के कारण वहाँ की माना में भी कमी होती जाती है।

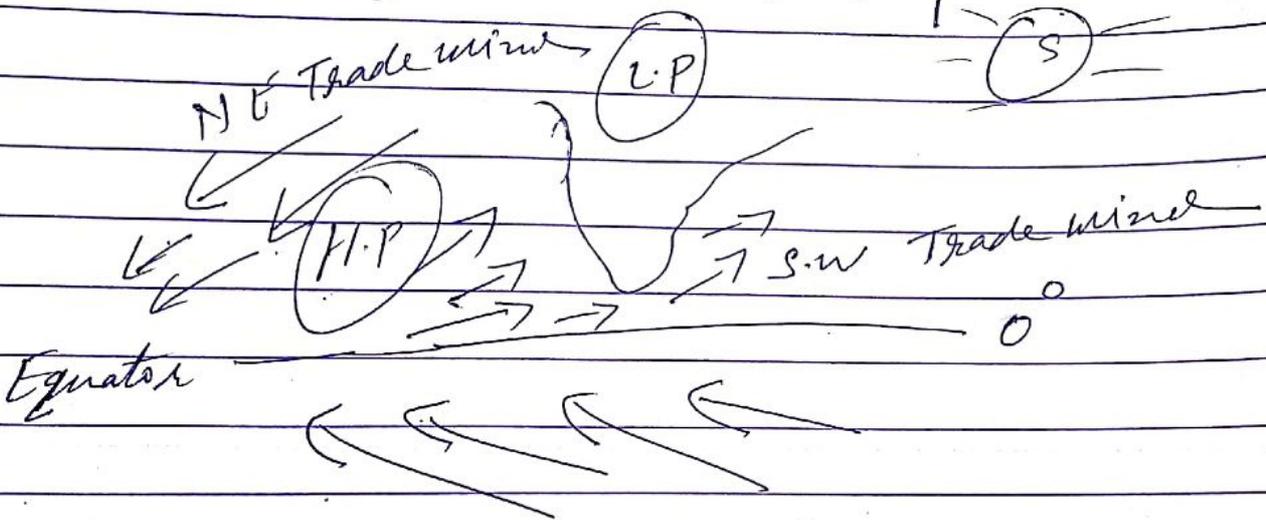
जोड़ की क्रम में उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनों पुनः चलने लगती हैं तथा यह उत्तर-पूर्वी मानसून बँटकर आता है तथा बंगाल की खाड़ी से जलवाष्प ग्रहण कर तमिलनाडु के तट पर वर्षा करता है।

उत्तरीयमान - यह मानसून की उत्पत्ति उत्तर उत्तर-पश्चिम दिशा में बहती है, क्योंकि उत्तर उत्तर-पश्चिम दिशा में बहती है, अतः उत्तर उत्तर-पश्चिम दिशा में बहती है। जबकि इसे निश्चित करना चाहिए।

(iii) विषुवतीय पड़वा पवन सिद्धांत - यह सिद्धांत फ्रेंचोंन मॉडेल के द्वारा प्रतिपादित किया गया है। इनके अनुसार विषुवतीय पड़वा पवन ही दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी पवन है। इसकी उत्पत्ति अतः उत्तर उत्तरीयमान (ITCZ Inter Tropical Convergence Zone) के कारण होती है।



इन्होंने भी मानसून की उत्पत्ति हेतु तापीय प्रभाव को प्रमुख माना है। ग्रीष्म ऋतु में तापीय विषुवत रेखा के उत्तरी विचलन के कारण ITCZ विषुवत रेखा के उत्तर में होता है। विषुवतीय पदवा पवन अपनी दिशा संशोधित कर भारतीय उपमहाद्वीप पर बने निम्न मात की शीत प्रवाहित होने लगता है। इसी से दक्षिण-पश्चिम मानसून का जन्म होता है।



जोड़े की ऋतु में सूर्य के दक्षिणायन होने पर निम्न मात का क्षेत्र उच्च मात में बदल जाता है तथा उत्तर पूर्वी व्यापक पवन पुनः गतिशील हो जाता है।

चूँकि यह सिद्धांत भी तापीय प्रभाव पर आधारित था। अतः इसकी आलोचना भी उसी आधार पर की गई जिस आधार पर तापीय सिद्धांत को